* श्रीहित निकुञ्जेश्वरी विजयते *

श्रीराधा चालीसा

रचयिता : बाबा श्रीगोपालदास 'लघुसखी'

प्रकाशक : श्रीराम पुजारीजी, श्रीराधारानी मन्दिर,
सेवाकुंज, वृन्दावन * मो. 09219732031

प्रकाशन तिथि : श्रीराधाष्टमी

न्यौछावर–नित्य पाठ

मंगला भजन

सोवत राधे श्याम जगाई ।
उठ बैठी वृषभानु दुलारी,
मुख मीड़त और लेत जम्हाई ।
लटपट चरण धरे धरणी पै,
लट छिटकी बईयाँ पर आई ॥
जो दातुन कीरति जु ने भेजी,
ललिता जु झारी भर लाई ।
कर श्रृंगार बैठी सिंहासन,
सब सखियाँ दर्शन को आई ॥

श्रीहित मंगल गान

जय-जय श्रीहरिवंश व्यास कुल मंडना ।
रसिक अनन्यन मुख्य गुरु जन भय खंडना ॥
श्री वृन्दावन वास रास रस भूमि जहाँ ।
क्रीडत श्यामा श्याम पुलिन मंजुल तहाँ ॥
पुलिन मंजुल परम पावन त्रिविध तहँ मारुत बहै ।
कुंज भवन विचित्र शोभा मदन नित सेवत रहै ॥
तहाँ संतत व्यासनंदन रहत कलुष विहंडना ।
जय जय श्री हरिवंश व्यास कुल मंडना ॥ १ ॥
जय जय श्री हरिवंश चन्द्र उद्दित सदा ।
द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा ॥

पर उपकार विचारि सुमति जग विस्तरी।
करुणासिंधु कृपालु काल भय सब हरी॥
हरी सब कलि काल की भय कृपा रूप जु वपु धर्‍यौ।
करत जे अनसहन निंदक तिनहुं पै अनुग्रह कर्‍यौ॥
निरभिमान निर्बैर निरुपम निष्कलंक जु सर्वदा।
जय जय श्री हरिवंश चन्द्र उद्दित सदा॥ २॥
जय जय श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी।
सारासार विवेकित कोविद बहु गुनी॥
गुप्त रीति आचरन प्रगट सब जग दिये।
ज्ञान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये॥
भक्ति हित जे शरण आये द्वन्द दोष जु सब घटे।

कमल कर जिन अभय दीने कर्म बंधन सब कटे ॥
परम सुखद सुशील सुन्दर पाहि स्वामिनि मम धनी ।
जय जय श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी ॥ ३॥
जय जय श्री हरिवंश नाम गुण गाइ है ।
प्रेम लक्षणा भक्ति सुदृढ़ करि पाइहै ॥
अरु बाढ़ै रस रीति प्रीति चित ना टरै ।
जीति विषम संसार कीरति जग विस्तरै ॥
विस्तरै सब जग विमल कीरति साधु संगति ना टरै ।
वास वृन्दाविपिन पावै श्री राधिका जु कृपा करै ॥
चतुर जुगल किशोर 'सेवक' दिन प्रसादहिं पाइहै ।
जय जय श्री हरिवंश नाम - गुन गाइहै ॥ ४॥

श्रीआचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशजी कृत-

श्रीयमुनाष्टक

व्रजाधिराजनन्दनाम्बुदाभगात्र चंदना-
नुलेपगंधवाहिनीं भवाब्धिबीजदाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधा पयस्विनीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ।। १ ।।

रसैकसीमराधिका पदाब्जभक्ति साधिकाम्
तदंगरागपिंजरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम् ।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतां जनाधि गञ्जनाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ।। २ ।।

व्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदि प्रपूर्य्यमाणयो-
र्महारसाब्धिपूरयोरिवाति तीव्रवेगतः ।
बहिः समुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम् ॥ ३॥
विचित्ररत्नबद्ध सत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलाम्
विचित्र हंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम् ।
विचित्र मीनमेखलां कृतातिदीनपालिताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥ ४॥
वहंतिकां श्रियां हरेर्मुदा कृपास्वरूपिणीम्
विशुद्धभक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः ।

सुधाश्रुतित्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥ ५॥

सुरेन्द्रवृन्दवन्दितां रसादधिष्ठिते वने
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैक सद्रशोन्मदाम् ।
अतीव विह्वलामिवोच्च्लत्तरंगदोर्लताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥ ६॥

प्रफुल्लपंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणाम्
रथांगनामयुग्मकस्तनीमुदार हंसकाम् ।
नितंबचारुरोधसां हरेर्प्रिया रसोज्ज्वलां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥ ७॥

समस्तवेदमस्तकैरगम्य वैभवां सदा
महामुनीन्द्रनारदादिभिः सदैव भाविताम् ।
अतुल्यपामरैरपि श्रितां पुमर्थसारदाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम् ॥ ८॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्
कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिंत्य विश्ववंदिताम् ।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः ॥ ९॥

॥ इति श्रीहितहरिवंशगोस्वामिना विरचितं यमुनाष्टकम् ॥

श्रीप्रबोधानन्दजी कृत–

श्रीहरिवंशाष्टक

त्वमसि हि हरिवंश श्यामचन्द्रस्य वंश,
परम रसद नादैर्मोहिताप शेष विश्वः।
अनुपम गुण रत्नैर्निर्मितोऽसिद्विजेन्द्र,
सदानन्दामोदी स हितहरिवंशो विजयते॥ 1॥
द्विज कुमुद कदम्बे चन्द्र वन्मोदकस्त्वं,
मुहुरति रस लुब्धालीन्द्र वृन्दे प्रमत्ते।
अतुलित रसधारा वृष्टि कर्त्तासिनादै–
र्विलसतु मम बाधा–मूर्ध्नि जिस्नोरिवास्त्रम्॥ 2॥

अधिकरसबलीनां राधिकां या सखीनाम्,
चरण कमल वीथी कानने राजहंस।
वदति ललित लीला गान विद्वत्प्रशंस्यो,
स जयति हरिवंशोध्वंश कोऽसौ कलौनाम्॥ 3॥
अतुलित गुणराशी प्रेम माधुर्य भाषी,
प्रणत कमल वंशोल्लास दायी सुहंस।
अखिल भुवन शुद्धानन्द सिन्धु प्रकाश:,
स जयति हरिवंश कृष्ण जीवाधिकांश:॥ 4॥
गुणगण गणनैर्यैर्वश्यते वश्य कृष्ण,
स्तरति किलय तोये वार्तया सतकम्बम्।

निरवधि हरिवंशो तत्र सा च प्रभाति,
नहि नहि बुध तस्मात्कृष्ण राधा स्वभक्ति॥ 5॥
हृदय नभसिशुद्धे यस्य कृष्णप्रियाया–,
श्चरण नखर चन्द्र भात्यलं चंचलाया:।
तदति कुतुक कुञ्जे भाव लब्धालिमूर्ति,
स जयति हरिवंशो व्यासवंश प्रदीप:॥ 6॥
चरण कमल रेणुर्यस्य संसार सेतु:,
पविरिव सुविलासी दर्प शैलेन्द्र मौली।
कलुष नगर दाही यस्य संसर्ग लेश:,
स जयति हरिवंश कृष्ण कान्तावतंश॥ 7॥

रमणजयन नृत्योद्भ्राम कोत्ताल पूरात्–
तदति ललित कुँजो दाज्ञयारादुपत्ये।
ललित भजन देहे मानुषे श्वेश्वरौ तौ,
स जयति हरिवंशो लब्धवान् यः समक्षः॥ 8॥

***

श्यामा तेरे चरणों की गर धूल ही मिल जाये,
सच कहती हूँ बस मेरी तकदीर बदल जाये ॥
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है ।
इक बूँद ही मिल जाये, मन की कली खिल जाये ॥
ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाये ॥
श्यामा मेरे जीवन की बस एक तमन्ना है ।
तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये ॥

श्रीराधा चालीसा

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरण प्रताप ते पायो विपिन को वास ।
वरनौ राधा चालीसा रसिकन हिये प्रकाश ॥
चरण कमल हिये राखि के जीवन होय अब धन्य ।
प्रिया सुयश नित गान करों चरन सरोज अनन्य ॥
अहो कृपामयी लाड़ली, प्यारी परम उदार ।
वन विनोद सुखकारिणी, रसिकन प्राणाधार ॥
जीवन प्राण अब वन रहो, नवल प्रिया सुखधाम ।
व्रज वृन्दावन स्वामिनि, ललितादिक अभिराम ॥

ब्रज में रावल सुन्दर ग्रामा ।
जहँ प्रगटी प्रिया पूरण कामा ॥ १ ॥
नित नव प्यारी रूप उजारी ।
जय जय जय बरसाने वारी ॥ २ ॥
जय वृषभानु दुलारी राधे ।
प्रीतम प्यारी नित्य आराधे ॥ ३ ॥
कीरति कन्या अति सुखदाई ।
श्रीदामा भैय्या मन भाई ॥ ४ ॥
ललितादिक को प्राणन प्यारी ।
सब ब्रजवासिन की सुखकारी ॥ ५ ॥

वृन्दावन रानी सुखधामा ।
नागरमणि प्यारी अभिरामा ॥ ६ ॥
नित्य श्याम तोहे लाड़ लड़ावें ।
निरख नैंन हिये प्राण सिरावें ॥ ७ ॥
श्याम भावती व्रज की शोभा ।
देखत रसिकन के मन लोभा ॥ ८ ॥
श्रीवृषभानु सुता अति भोरी ।
कोटि सुधा सिन्धु झकझोरी ॥ ९ ॥
बरसानो निज धाम तिहारो ।
टहल महल करत जहाँ प्यारो ॥ १० ॥

श्रीवृषभानु भवन जब आईं।
नित नव मंगल होत बधाई ॥ ११ ॥
विपिन राज कुञ्जन में डोलत।
लता वेलि शुक राधा बोलत ॥ १२ ॥
राधा राधा जो कोई गावत।
सहजहि वे मोहन को भावत ॥ १३ ॥
जो कोई राधा नाम सुनावे।
श्याम वेगि ताही अपनावे ॥ १४ ॥
रसिक रसीली कुञ्जविहारिनि।
प्रीतम प्यारी मोद बढ़ावनि ॥ १५ ॥

गह्वर कुञ्जन कुटि बिराजत ।
प्रेम सरोवर सुख उपजावत ॥ १६ ॥
लता बेलि शुक यमुना कूले ।
राधा राधा कह सब फूले ॥ १७ ॥
सेवाकुंज नित रास रचावो ।
नागरमणि मन सुख उपजावो ॥ १८ ॥
शयन सेज निज मुकुट सँवारे ।
ये सुख उर सों जात न टारे ॥ १९ ॥
सब लोकन तुम यश विख्याता ।
प्रेम भक्ति निज मंगल दाता ॥ २० ॥

श्रीवृन्दावन नवल नागरी।
व्रज वनितन वन रही आगरी ॥ २१॥
खेल खेलावत निज ललितादिक।
फूले रहत रसिक वर नाइक ॥ २२॥
लीला मूल स्वरूप धामिनि।
आदिशक्ति निज श्रोत भामिनी ॥ २३॥
नव नव प्यारी नवल सहेली।
विहरत संग लिये अलबेली ॥ २४॥
सब व्रज की प्यारी ठकुरानी।
वृन्दावन जिनकी रजधानी ॥ २५॥

राज करे सब विधि सब काला ।
रसिक बिहारिणि भोरी बाला ॥ २६ ॥
रवि तनया पिय ध्यान लगावे ।
राधा राधा कह सुख पावे ॥ २७ ॥
सब विद्या सुप्रवीन लाड़िली ।
हित सजनी मुख देत चाड़िली ॥ २८ ॥
ब्रह्म कोटि नूपुर अवतारा ।
शिव शारद पावत नहिं पारा ॥ २९ ॥
नख दुति उपमा कैसे दीजै ।
कोटि शीश छिन-छिन ही भीजै ॥ ३० ॥

रसिक रसीलो राधा देखत।
अपनो जनम सुफल करि लेखत ॥ ३१॥
श्रीवृन्दावन रस की सम्पति।
राधारानी रसिकन दम्पति ॥ ३२॥
कुञ्ज-निकुञ्जन जब-जब जाहीं।
प्रीतम करैं मुकुट परछाही ॥ ३३॥
नवल किशोरी जहाँ चलि जावें।
चरनन रज पिय नैन लगावें ॥ ३४॥
मानत आपन भाग बड़ाई।
तन मन में सब जड़ता आई ॥ ३५॥

करुणामयी करुणा की खान।
अपने जन सौं करें न मान॥ ३६॥
जो कोई शरण प्रिया की आवै।
श्यामसुन्दर ताहि अपनावे॥ ३७॥
प्रिये बना लो अपनी दासी।
चाहत नित ही महल खवासी॥ ३८॥
करो कृपा ना कीजै देरी।
सखी लघु निज चरणन चेरी॥ ३९॥
सब विधि शरण तिहारी श्यामा।
'हित गोपाल' प्यारी सुखधामा॥ ४०॥

॥ दोहा ॥

नित उठ राधा चालीसा, पाठ करे मन लाय।
नव-निकुंज निज महल की, वेगि टहल मिल जाय॥
रसिक रसीली भाँवती, मंगल मूरति रूप।
बसहु सदा सुख कुँज में, सुन्दर सुखद स्वरूप॥

॥ बाबा गोपालदास कृत श्रीराधा चालीसा सम्पूर्ण ॥

★ तोहि बार-बार सुमिरूँ ★

तोहि बार-बार सुमिरूँ, हे राधारानी।
तोहि निसिदिन सुमिरूँ, हे राधारानी॥

वृन्दावन की लता-पता में, मन्दिर बनौ आसानी।
याके पीछे मान सरोवर, बाको निर्मल पानी॥1॥

शंकर तेरौ ध्यान धरत हैं अम्बे चँवर ढुरावै।
ब्रह्मा तेरी करे आरती, वृन्दावन की रानी॥2॥

सिंहासन पै बैठ लाड़ली, कैसो मान बढ़ावै।
रूप देख के मोहन रीझै, चरनन शीश नवावै॥3॥

सखियाँ तेरो ध्यान धर हैं चरनन शीश नवावै।
तेरे दर्शन करके राधे, जनम सुफल है जावै॥4॥

★ सेवाकुञ्ज में मंगला भोग के पद ★

राग गीत

माखन खा गया विहारी मेरा हँस-हँस के ।

माखन खा गई राधा प्यारी मेरा हँस-हँस के ॥

मेरे कोठे पै आ वैहदा, माखन लुट-लुट खांदा ।

मेरी मटकी फोड़ गिराँदा, जाँदा कोठे टपटप के ॥

मैं तो दैं रहियां दुहाई पकड़ो-पकड़ो रे कन्हाई ।

कित्थे भाग न जाई, जांदा नस-नस के ॥

तैन्नू कुब्जा पढ़ाई पट्टी, उत्थे छाछ न मिलदी खट्टी ।

माखन रोटी देवां तत्ती, खाओ हँस-हँस के ॥

जरा मुरली मधुर बजाओ, मैन्नू मीठी तान सुनाओ ।

थारे चरण कमल बलिहारी, दरशन दीजो हँस-हँस के ॥

★ स्नेह सवैया ★

आप बसौ बरसाने अली वृषभानु लली सुधि मेरी बिसारी ।
कोमल चित्त दीनन के हित नित्त करो ये वान तिहारी ॥
कान दिये सुनिये मम स्वामिनि दासी की आस पुजावन हारी ।
मोहि देहु यही व्रज डोली करूँ तेरो नाम जपूँ नित श्यामा प्यारी ॥
हेम सिंहासन हीरा जड़े तेहि पै पट हैं अति मन्द बिछाये ।
सोलह सहस्त्र अली निकसी वृषभानु लली उत श्याम जू आए ॥
आरती लै कोई गुंजन माल लिए तुलसी दल शीश नवाए ।
स्वागत प्रेम सो मध्य बिठाई मैं भी रही फल नैनन पाए ॥
ऐसे किशोरी जू नाहिं बने, कैसे सुधि को विसार रही हो ।
हैं अविनासिन दीनन स्वामिनि का मम वार विचारि रही हो ॥

तेरे विलोकत ऐसी दशा मोहि क्यों भवसिंधु में डारि रही हो ।
मो सम दीन अनेकन तारे वा श्रम ते अब हारि रही हो ॥
कीरति नन्दनी कीजै कृपा कर जोरि कहूँ निज पास बसाओ ।
सीस धरूँ धरणी बिच स्वामिनि हे ललिते-ललिते समझाओ ॥
मोय बिसाखा बिसारो नहिं वृषभानु सुताकूँ व्यथा ये सुनाओ ।
ऐसी कही मिल आली सखी अब चरणन चेरी मोहि बनाओ ॥

★ सन्ध्या भोग के पद ★

राग गौरी

नमो-नमो जय श्रीहरिवंश ।
रसिक अनन्य वेणुकुल मण्डन लीला मानसरोवर हंस ॥
नमो (जयति) वृन्दावन सहज माधुरी रास विलास प्रशंस ।
आगम निगम अगोचर राधे चरण सरोज व्यास अवतंस ॥

संध्याभोग अली लै आई।

पेड़ा खुरमा और जलेबी, मोदक मगद मलाई॥

कंचन थार धरे भरि आगे, पिस्ता अरु बादाम रलाई।

खात खबावत लेत परस्पर हँसन दसन चमकन अधिकाई॥

दोहा- अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी बनाय।

पवाबत प्यारे लाल को, पहिले प्रिया पबाय॥

पाणि परस मुख देत वीरी पिय तब प्यारी नैनन मुसक्याई।

ललितादिक जै श्रीकमलनयनहित धन दिन मानत आपनो माई॥

दोहा- पाग बनी पटका बनो, बनों लाल को भेख।

श्रीराधावल्लभलाल की, दौड़ आरती देख॥

श्री राधा जी की आरती

जै जै हो राधे जू मैं शरण तिहारी।

लोचन आरती जाऊँ बलिहारी ॥ जै जै हो०

पाट पाटम्बर ओढ़े नीली सारी।

सीस के सैंदुर जाऊँ बलिहारी ॥ जै जै हो०

रतन सिंहासन बैठीं श्री राधे।

आरती करें हम पिय संग जोरी ॥ जै जै हो०

फूल सिंहासन बैठीं श्री राधे।

आरति करें हम पिय संग जोरी ॥ जै जै हो०

झलमल झलमल मानिक मोती।

अब लखि मुनि मोहे पिय संग जोरी ॥ जै जै हो०

श्री राधे पद पंकज भक्त की आशा ।
दास मनोहर करत भरोसा ॥ जै जै हो०

राधा मेरी स्वामिनी मैं राधे कौ दास ।
जनम-जनम मोहि दीजियो श्रीवृन्दावन वास ॥

सब द्वारन कूँ छोड़ि के आयो तेरे द्वार ।
श्रीवृषभानु की लाड़िली मेरी ओर निहार ॥

★ भजन ★

दरबार में राधारानी के दुःख दर्द मिटाये जाते है ।
दुनियाँ के सताये लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते हैं ॥

संसार नहीं है रहने को, यहाँ दुख ही दुख है सहने को।
भर-भर के प्याले अमृत के, यहाँ रोज पिलाये जाते हैं ॥
दरबार में राधारानी के०॥

पल-पल में आस निराश भई, दिन-दिन घटती पल-पल बढ़ती।
दुनियाँ जिनको ठुकरा देती, वह गोद में बिठाये जाते हैं ॥
दरबार में राधारानी के०॥

जो राधा - राधा कहते हैं, वे प्रिया-शरण में रहते हैं ।
करती हैं कृपा वृषभानुसुता, वही महल बुलाये जाते हैं ॥
दरबार में राधारानी के०॥

वो कृपामयी कहलाती हैं, रसिकों के मन को भाती हैं।
दुनियाँ मैं जो बदनाम हुए, पलकों पै बिठाये जाते हैं ॥
दरबार में राधारानी के०॥

अरे मन चल वृन्दावन धाम रटेंगे राधे-राधे ॥
तू विषयों में क्यों डोले, क्यों पाप पुण्य को तोले ।
सबसे पावन है राधा नाम, रटेंगे राधे-राधे ॥ १॥
तू डगर डगर क्यों भटके, क्यों लोभ मोह में अटके ।
करले राधा चरण विश्राम, रटेंगे राधे-राधे ॥ २॥
आशा के फूल खिलेंगे, श्यामा और श्याम मिलेंगे ।
दिन रैन सुबह और शाम रटेंगे राधे-राधे ॥ ३॥

जहाँ बैठी कीरति कुमारी, संग में रसिक बिहारी ।
जहाँ चरण पलोटे श्याम, रटेंगे राधे-राधे ॥ ४॥

मीठे रस से भरोड़ी राधा रानी

मीठे रस से भरोड़ी राधा रानी लागे, महारानी लागे ।
म्हाने खारो खारो जमुना जी रो पानी लागे ॥ मीठे०..॥
जमुना जी तो कारी कारी, राधा गोरी-गोरी ।
वृन्दावन में धूम मचावे, बरसाने की छोरी ॥
ब्रजधाम राधाजू की रजधानी लागे, रजधानी लागे ॥ म्हाने०..॥
कान्हा नित मुरली में सुमिरे राधा बारम्बार ।
कोटिन रूप धरे नन्द नन्दन, तोउ न पायो पार ॥
रूप रंग की छबीली पटरानी लागे, पटरानी लागे ॥ म्हाने०.॥

ना भावै म्हाने माखन मिश्री, अब ना कोई मिठाई ।
म्हारी जीवड़िया ने भावै, राधा नाम मलाई ॥
वृषभानु की लली तो गुड़धानी लागे, गुड़धानी लागे ॥ म्हाने०॥
राधा राधा नाम जपत हैं, जो नर आठों याम ।
तिनकी बाधा दूर करत हैं, राधा राधा नाम ॥
राधानाम में सफल जिंदगानी लागै, जिंदगानी लागे ॥ म्हाने०॥

★★★★

सेवायत :

बड़ी सरकार एवं छोटी सरकार, वृन्दावन

संयोजक :

राम पुजारी ★ मो. 9897219045

समर्पण गीत

मन जइयो मत छोड़, राधारानी के चरण ।
ब्रजरानी के चरण, सुखदानी के चरण ।
बाँके ठाकुर के, बाँकी ठकुरानी के चरण ॥
वृषभानु की किशोरी, सुनी गैया हू ते भोरी ।
प्रीति जानिकें हूँ थोरी, तोहि राखेंगीं शरण ॥
जाकूँ श्याम उर हेर, राधे राधे राधे टेर ।
बाँसुरी में बेर - बेर, करें नाम से रमण ॥
भक्ति प्रेमिन बखानी, जाकी महिमा रसखानी ।
मिले भीख मनमानी, करे प्यार से वरण ॥
ऐरे मन मतवारे, छोड़ दुनियाँ के द्वारे ।
राधा नाम के सहारे, सौंप जीवन मरण ॥

आरती सन्ध्या गीत

श्रीराधा मेरी प्राणन हू ते प्यारी।
भूलहु मान न कीजिये सुन्दरि मैं तो शरण तिहारी॥
तनक चित्त हँस बोलिये श्यामा खोलिए घूँघट सारी।
जै श्रीकृष्णदास हित प्रीति रिति बस भर लई अंकन भारी।।

कीर्त्तन

हमारो धन राधा श्रीराधा श्रीराधा। परम धन राधा श्रीराधा श्रीराधा।।
जीवन धन राधा राधा राधा राधा। प्राण धन राधा श्रीराधा श्रीराधा।।
प्रिये राधे प्रिये राधे, राधे राधे प्रिया प्रिया।
प्रिये श्यामा प्रिये श्यामा, श्यामा श्यामा प्रिया प्रिया।।

मुद्रक : श्रीहित रतन प्रेस, वृन्दावन ✆ 09837106167, 09410810927